gyanodaya prabha

अगस्त 2024
अंक 29

विशेषांक

सम्पादकीय

“दिल से निकलेगी न मर कर भी वतन की उल्फ़त

मेरी मिट्टी से भी ख़ुशबू-ए-वफ़ा आएगी”

-लाल चन्द फ़लक

अपना देश ,अपने लोग अपने घर से किसे प्रेम नहीं होगा ? जिस देश की आवो हवा में हमने जीवन व्यतीत किया |जिस धरती की गोद में खेले, पले - बढे ,उस माटी से किसे प्रेम नहीं होगा ? ज़ाहिर है हम सभी अपने वतन से दिलों जां से प्यार करते हैं और उस पर सब कुछ न्योछावर करने को तैयार रहते हैं | आज़ादी के दीवाने, इस देश के अमर सपूत भी इसी जज्बे के साथ जिए और अंग्रेजों की गुलामी से भारत माँ को मुक्त करने के लिए अपने प्राणों की बाजी लगा दी | हिन्दू -मुस्लिम सिख ,ईसाई , सभी जाति धर्म के लोगों ने इस आज़ादी के महापर्व में बढ़ चढ़कर हिस्सा लिया | पुरुष ही नहीं देश की नारियां भी पीछे नहीं रहीं | झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई को कौन भूल सकता है ,जिसकी वीरता के आगे अंग्रेज भी नत मस्तक हुए और उन्हें वीरांगना कहा | इसके अतिरिक्त जवाहर लाल नेहरू,अशफाकउल्ला खान, सरदार वल्लभ भाई पटेल,लाला लाजपत राय,राम प्रसाद बिस्मिल,बाल गंगाधर तिलक,बिपिन चंद्र पाल,चित्तरंजन दास, बेगम हजरत महल,भगत सिंह,लाल बहादुर शास्त्री,नाना साहब,चंद्रशेखर आजाद,सी. राजगोपालाचारी,अब्दुल हाफिज, मोहम्मद बराकतुल्लाह,सुभाष चंद्र बोस,मंगल पांडे,सुखदेव, खुदीराम बोस ,सरोजिनी नायडू, भीकाजी कामा , कस्तूरबा गांधी,नीरा आर्या,कमला नेहरू,अरुणा आसफ अली,और न जाने कितने जाने - अनजाने नाम -एक लम्बी श्रृंखला |ऐसे ही हमें आज़ादी नहीं मिली, हमने इसका मूल्य अपनी जान देकर ,अपना सर्वस्व लुटाकर चुकाया है | जिससे जो बन पड़ा उसने देश को समर्पित कर दिया |लेखक/कवि भी पीछे नहीं रहे अपनी कलम से आजादी के आन्दोलन में जान फूंक दी |

आज जबकि हम स्वतंत्र हैं |स्वतंत्रता हमें उपहार में मिली है | हमारा फ़र्ज़ है कि अपने देश की खुशहाली के लिए कार्य करें |अपने अन्दर देशभक्ति का जज्बा पैदा करें |हम भारतीय हैं ,इस पर हमें गर्व होना चाहिए | भारत की अमूल्य सांस्कृतिक धरोहर है, इसे हमें सहेजकर रखना होगा |देश को मिलजुलकर प्रगति पथ पर आगे बढ़ाना होगा |निश्चित रूप से भारत ने आज़ादी के बाद निरंतर उल्लेखनीय प्रगति की है इसे आगे भी जारी रखना हमारा कर्तव्य है |आज अंग्रेजी शासन तो नहीं है जिनसे हमें लड़ना है पर हमारे आसपास हमारे वतन पर बुरी नज़र रखने वाले लोग जरूर मौजूद हैं |इनसे हमें अपने देश को बचाना होगा | विश्व में युद्ध के संकट बने रहते हैं | हमारे पड़ोसी चीन और पकिस्तान से निरंतर हमें चुनौती मिल रही हैं | हमें अपने आपको हर तरह से मजबूत बनना

पड़ेगा |हर व्यक्ति को ,हर परिवार को मिलजुलकर एकता के साथ रहना होगा | हम जो भी कार्य करें वह देश की भलाई के लिए हो ,इसका ध्यान रखना होगा |यदि हम अपना काम ईमानदारी से कर सके, तो यह भी देशभक्ति ,देश सेवा का कार्य होगा | आइए हम सब मिलकर एक नए भारत का निर्माण करें जो विश्वगुरु के रूप में उभरे और "सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाःसर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चित् दुःख भाग्भवेत्" की अवधारणा को साकार कर सकें |

अंत में इन पंक्तियों के साथ अपनी बात समाप्त करता हूँ कि - आवोदाना रहे न रहे ,चहचहाना रहे न रहे |मैंने गुलशन की खैर मांगी है , आशियाना रहे न रहे |

बहुत बहुत शुभकामनाएँ |

संपादक

<u>अगस्त माह की गतिविधियाँ</u>

केरियर काउंसलिंग कार्यक्रम

6 अगस्त 2024 को ज्ञानोदय सर्वमंगल सीनियर सेकेंडरी स्कूल में एक केरियर काउंसलिंग कार्यक्रम का आयोजन किया गया, जिसमें सजग कंसलटेंसी की संस्थापक श्रीमती विभा गाँधी इंदौर द्वारा दो सत्रीय कार्यक्रम आयोजित किया गया |प्रथम सत्र सुबह 9 बजे से 10:30 बजे तक कक्षा 9 व 10 के विद्यार्थियों के लिए तथा द्वितीय सत्र दोपहर 12 :30 से 2 बजे तक कक्षा 11 और 12 के विद्यार्थियों के लिए था | सत्र में विद्यार्थियों के अतिरिक्त अभिभावकों ने भी अपनी उपस्थिति दर्ज कराई |

कार्यक्रम का आरम्भ अतिथि श्रीमती विभा गाँधी के स्वागत के साथ हुआ | श्रीमती गाँधी ने जिम्मेदारियों और केरियर पथ पर व्यावहारिक जानकारी साँझा की और विभिन्न केरियर के लिए आवश्यक योग्यताओं पर प्रकाश डाला | संस्था के प्राचार्य डॉ अभिनव शुक्ला ने भी भी छात्रों व अभिभावकों को संबोधित करते हुए 12 वीं कक्षा के बाद उपलब्ध विभिन्न केरियर विकल्पों पर बहुमूल्य जानकारी प्रदान की व छात्रों को विविध केरियर पथ तलाशने के लिए प्रोत्साहित किया |

कार्यक्रम में उपस्थित अभिभावकों ने कार्यक्रम की भूरि भूरि प्रशंसा की एवं ऐसे कार्यक्रमों को भविष्य में भी जारी रखने का आग्रह किया | कार्यक्रम के अंत में प्राचार्य डॉ अभिनव शुक्ला ने श्रीमती विभा गाँधी का आभार प्रदर्शित करते हुए उन्हें सम्मानित किया |

कार्यक्रम की प्रभारी सुश्री तनुजा जैन थीं |

जन्माष्टमी पर नृत्य कार्यक्रम

24 अगस्त, 2024 को ज्ञानोदय सीनियर सेकेंडरी स्कूल में कक्षा VI से IX और XI तक के विद्यार्थियों के लिए एक नृत्य गतिविधि आयोजित की गई। कार्यक्रम का आयोजन नृत्य विभाग की ओर से किया गया था.|हमारे संस्थान में आयोजित जन्माष्टमी नृत्य प्रदर्शन संस्कृति, परंपरा और आध्यात्मिकता का एक जीवंत उत्सव था। संगीत की लयबद्ध धुनों और हमारे छात्रों की सुंदर गतिविधियों के साथ, इस कार्यक्रम ने दर्शकों को मंत्रमुग्ध कर दिया और भगवान कृष्ण की शिक्षाओं और दिव्य लीला के सार को जीवंत कर दिया।कार्यक्रम के दौरान बच्चों ने इसका खूब लुत्फ उठाया। यह प्रतिभा और समर्पण का एक मंत्रमुग्ध कर देने वाला प्रदर्शन था, जो हमारे छात्रों द्वारा हफ्तों की तैयारी और अभ्यास की परिणति को प्रदर्शित करता था। इस कार्यक्रम ने न केवल मनोरंजन किया, बल्कि प्रतिभागियों और दर्शकों के बीच भक्ति, प्रेम और धार्मिकता के मूल्यों को स्थापित करने के लिए एक मंच के रूप में भी काम किया।

कार्यक्रम के विषय के अनुरूप, हमारे छात्रों ने अपने सुंदर प्रदर्शन से माहौल को जीवंत कर दिया । यह उनका जुनून और कड़ी मेहनत.का प्रतिबिम्ब था |

हमारे संस्थान में जन्माष्टमी नृत्य प्रदर्शन के आयोजन का प्राथमिक उद्देश्य भगवान कृष्ण के जन्मदिन के शुभ अवसर को याद करना और इस त्योहार से जुड़ी समृद्ध सांस्कृतिक विरासत का जश्न मनाना था। इस कार्यक्रम के माध्यम से, हमारा उद्देश्य हमारे छात्रों को अपना प्रदर्शन करने के लिए एक मंच प्रदान करना था। नृत्य में प्रतिभाएं, जन्माष्टमी के महत्व के बारे में उनकी समझ को गहरा करती हैं, और सभी प्रतिभागियों के बीच एकता और सामुदायिक भावना को बढ़ावा देती हैं। जन्माष्टमी नृत्य प्रदर्शन ने ज़बरदस्त सफलता हासिल की , जिससे कई महत्वपूर्ण परिणाम प्राप्त हुए। यह कार्यक्रम एक शैक्षिक अवसर के रूप में भी काम आया, क्योंकि छात्रों और दर्शकों ने समान रूप से नृत्य के माध्यम से भगवान कृष्ण के जीवन और शिक्षाओं के बारे में समुचित जानकारी प्राप्त की। इसने सांस्कृतिक आदान-प्रदान और प्रशंसाके लिए एक मंच प्रदान किया, क्योंकि इस साझा विरासत का जश्न मनाने के लिए विभिन्न पृष्ठभूमि के प्रतिभागी एक साथ आए।कार्यक्रम में निम्नलिखित प्रतिभागियों ने भाग लिया - 1. निविधा जैन (छठी स)2. कनिष्क श्रीवास्तव (छठी स) 3. माही जैन (सातवीं ब) 4.अवनि जैन (सातवीं द) 5. दिव्यांशी बुंदेला (आठवीं अ) 6. खनक दांगी (आठवीं ब) 7.वैष्णवी परिहार (आठवीं द) 8. अनन्या सोनी (ग्यारहवीं द) गतिविधि की प्रभारी सुश्री कुमारी प्रियंका विश्वास थीं

ऑल इंडिया कराते चैंपियनशिप में ज्ञानोदय विद्यालय के कराते खिलाड़ियों ने हरियाणा में जीते 3 कांस्य पदक

पंचकूला हरियाणा में कराते एसोसिएशन ऑफ इंडिया के तत्वावधान में आयोजित ऑल इंडिया कराते चैंपियनशिप में ज्ञानोदय विद्यालय के कराते खिलाड़ियों ने हरियाणा में जीते 3 कांस्य पदक |

ज्ञानोदय विद्यालय के कराते प्रशिक्षक सेंसाईं संदीप अग्रवाल ने बताया कि इस प्रतियोगिता में 25 राज्यों एवं अन्य संस्थाओं के लगभग 1500 महिला एवं पुरुष खिलाड़ियों ने भाग लिया। इस प्रतियोगिता का शुभारंभ हरियाणा की मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी की पत्नी श्रीमती सुमन सैनी जी के द्वारा किया गया। इस सुअवसर पर कराते एसोसिएशन ऑफ़ इंडिया के अध्यक्ष बैकुंठ सिंह एवं जनरल सेक्रेटरी सेंसाईं योगेश कालरा जी मौजूद रहे। यह प्रतियोगिता कराते एसोसिएशन ऑफ इंडिया के रेफरी कमीशन सचिव सेंसेई पारितोष शर्माजी, चेयरमैन सेंसेई अमित गुप्ताजी के तकनीकी मार्गदर्शन में संपन्न हुई। इस

प्रतियोगिता में मध्यप्रदेश से रेफरी कमीशन सदस्य सेंसेई संदीप अग्रवाल और राम मिश्रा ने निर्णायक की भूमिका निभाई ।इस प्रतियोगिता में जूनियर बालक वर्ग टीमकाता स्पर्धा में देवेंद्र नामदेव,कृष्णासिंह दांगी ने कांस्य पदक जीता। इस प्रतियोगिता में सावी अग्रवाल ने अपने-अपने आयुवर्ग में उत्कृष्ट कला का प्रदर्शन किया।

इस अवसर पर विद्यालय प्रबंधन ,विद्यालय के प्राचार्य डॉ अभिनव शुक्ला एवं अभिभावकों सहित शहर के अन्य गणमान्य लोगों ने खिलाड़ियों को बधाई दी।

धूमधाम से मना 78 वां स्वतंत्रता दिवस

ज्ञानोदय सर्वमंगल विद्यालय में स्वतंत्रता दिवस बहुत ही धूमधाम से मनाया गया |हमने इस स्वतंत्रता दिवस को अद्वितीय उत्साह के साथ मनाया | कार्यक्रम का आरम्भ विद्यालय के प्राचार्य डॉ अभिनव शुक्ला द्वारा ध्वजारोहण के साथ हुआ |

इस अवसर पर प्राचार्य जी ने सभा को संबोधित करते हुए 15 अगस्त के महत्त्व को समझाया |इस अवसर पर विद्यालय के हेड गर्ल और हेड बॉय ने भी अपने विचार साँझा किए | विद्यार्थियों ने मधुर आवाज़ में देशभक्ति गीत प्रस्तुत किए | इस अवसर पर अनेक प्रतियोगिताएं का भी आयोजन हुआ | खेल भावना एवं समूह भावना को प्रदर्शित करते हुए शिक्षक एवं छात्रों के मध्य बैडमिन्टन मैच भी खेले गए | इस अवसर पर एक पेंटिंग प्रतियोगिता का भी आयोजन किया गया | जिसमे अपनी कलाकृति द्वारा छात्रों ने अपनी देशभक्ति को प्रदर्शित किया | पेंटिंग प्रतियोगिता का आयोजन श्री प्रशांत सील के नेतृत्व में किया गया |

हमारे छात्रों ने विभिन्न प्रकार की देशभक्तिपूर्ण नृत्य गतिविधियों के साथ शानदार प्रदर्शन किया:

इस भव्य कार्यक्रम में हमारे प्रतिभाशाली नर्तकों ने हमारी समृद्ध सांस्कृतिक छवि का प्रदर्शन करते हुए, भारत के विभिन्न क्षेत्रों के जीवंत लोक नृत्यों का प्रदर्शन किया। पारंपरिक और आधुनिक शैलियों के संलयन ने एक गतिशील मोड़ जोड़ा, जो हमारे अतीत और वर्तमान के सामंजस्य का प्रतीक है।

कार्यक्रम में अद्भुत कोरियोग्राफ़िक ने भारत के स्वतंत्रता संग्राम और प्रगति की हमारी यात्रा को दर्शाया, और सभी को आश्चर्यचकित कर दिया

स्वतंत्रता दिवस कार्यक्रम की कुछ झलकियाँ –

15 अगस्त के सुअवसर पर स्केटिंग का शानदार प्रदर्शन

15 अगस्त को, हमारे स्कूल ने गर्व से एक रोमांचक स्केटिंग प्रतियोगिता की मेजबानी की, जिसने हमारे छात्रों की अविश्वसनीय प्रतिभा और उत्साह को प्रदर्शित किया! आश्चर्यजनक चक्करों से लेकर प्रभावशाली गति तक, यह ऊर्जा, उत्साह और मुस्कुराहट से भरा दिन था।हमारे सभी प्रतिभागियों ने शालीनता और दृढ़ संकल्प के साथ अद्भुत प्रदर्शन किया और दर्शकों ने भी पूरे माहौल को प्रोत्साहन से भर दिया! इस कार्यक्रम को यादगार बनाने के लिए हमारे समर्पित शिक्षकों और आयोजकों ने अपनी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई |इस गतिविधि की प्रभारी श्रीमती स्वर्णाली सील थीं

|.

टेनग्राम पहेली गतिविधि

दिनांक 30 अगस्त 2024 को ज्ञानोदय सर्वमंगल विद्यालय में टेनग्राम गतिविधि का आयोजन किया गया | इस गतिविधि का उद्देश्य समस्या-समाधान कौशल विकसित करना,स्थानिक तर्क बढ़ाना ,रचनात्मकता और टीम वर्क को बढ़ावा देना था | इस गतिविधि में छात्रों ने उत्कृष्ट समस्या-समाधान कौशल और रचनात्मकता का प्रदर्शन किया |छात्रों को अपनी पहेलियाँ बनाने के लिए प्रेरित किया गया एवं टीम वर्क और सहयोग को सफलतापूर्वक बढ़ावा दिया गया इस गतिविधि के माध्यम से छात्रों ने ज्यामितीय आकृतियों और स्थानिक संबंधों का ज्ञान प्राप्त किया| आलोचनात्मक सोच और प्रभावी संचार कौशल विकसित किया|
एवं धैर्य, दृढ़ता और आत्मविश्वास का निर्माण किया| इस गति विधि की प्रभारी शिक्षिका: सुश्री पूजा जैन थीं |

अंतर-कक्षा वाद-विवाद प्रतियोगिता

दिनांक 30 अगस्त 2024 को स्कूल सिनेमा हॉल में अंतर-कक्षा वाद-विवाद प्रतियोगिता आयोजित की गई । इस प्रतियोगिता में कक्षा VI और VIII के प्रतिभागियों ने भाग लिया |इस प्रतियोगिता का विषय था -"क्या इंटरनेट छात्रों के लिए हानिकारक या सहायक है?" इस विषय पर छात्रों ने पक्ष , विपक्ष में अपने - अपने तर्क प्रस्तुत किये |

प्रतियोगिता की शुरुआत कक्षा सातवीं अ के एंकर अरहम कुमार जैन द्वारा हमारे प्रिंसिपल, शिक्षकों, न्यायाधीशों और छात्रों का स्वागत करके की गई। निर्णायक मंडल में दो न्यायाधीश शामिल थे: अंग्रेजी विभाग की श्रीमती जयश्री पाटिल और श्री गजेंद्र सिंह राठौड़।
प्रत्येक टीम का प्रतिनिधित्व तीन वक्ताओं द्वारा किया गया - एक प्रस्ताव के पक्ष में बहस कर रहा था और दूसरा इसके विरोध में। प्रतिभागियों ने अच्छे शोधपूर्ण तर्क प्रस्तुत किए । . प्रथम पुरस्कार आठवीं कक्षा को दिया गया। दूसरा पुरस्कार

कक्षा छह को मिला। सर्वश्रेष्ठ वक्ता का पुरस्कार कक्षा आठवीं द की वेदिका असाटी को मिला, कक्षा आठवीं स की मान्या सिंह बिसेन को दूसरा और कक्षा छह ब के अकिंचन जैन को तीसरा पुरस्कार दिया गया।

कार्यक्रम का समापन समन्वयक श्री राहुल जैन द्वारा परिणामों की घोषणा करने और प्रतिभागियों को उनके उत्कृष्ट प्रदर्शन के लिए प्रशंसा करने और उन्हें अपने वाद-विवाद कौशल में सुधार जारी रखने के लिए प्रोत्साहित करने के साथ हुआ।

अंतर-कक्षा वाद-विवाद प्रतियोगिता एक ज़बरदस्त सफलता थी, जिसने प्रतिभागियों और दर्शकों दोनों को बहुत कुछ सोचने पर मजबूर कर दिया। यह एक शानदार अनुभव था जिसने न केवल छात्रों के वाद-विवाद कौशल को प्रदर्शित किया बल्कि आज के डिजिटल युग में विषय की प्रासंगिकता पर भी प्रकाश डाला।इस गतिविधि के प्रभारी - श्री एडवर्ड कोलिंस थे |

भजन प्रतियोगिता

ज्ञानोदय सर्वमंगल विद्यालय के नायकन हॉल में शनिवार 31अगस्त 2024 को अंतर सदनीय युगल गीत भजन प्रतियोगिता हुई |इस प्रतियोगिता में 9वीं और 11वीं कक्षा के प्रतिभागियों ने भाग लिया |

विवेकानंद हाउस द्वारा 'मेरे बांके बिहारी लाल' ,टैगोर हाउस द्वारा 'मधुबन के मंदिरों में',लक्ष्मी सदन द्वारा 'मीठे रस के भर्योनि', सरोजनी हाउस द्वारा 'छोटो सो मेरो मदन गोपाल' भजन पर अपनी प्रस्तुति दी गई | सभी प्रतिभागियों ने अपनी सुरीली एवं मनमोहक प्रस्तुति से सब का मन मोह लिया |इसमें लक्ष्मी हाउस विजेता रहा | गतिविधि के प्रभारी संगीत शिक्षक श्री उत्कर्ष गौतम थे |

गतिविधि में निर्णायकों की भूमिका श्री रूपेश मिश्रा ,श्रीमती स्वर्णाली सील ,श्री प्रशांत सील एवं सुश्री प्रियंका विश्वास ने निभाई |कार्यक्रम के अंत में प्राचार्य डॉ अभिनव शुक्ला ने सभी प्रतियोगियों का उत्साहवर्धन करते हुए उनकी शानदार प्रस्तुति के लिए उन्हें सराहा |

विद्यार्थी कोना

विरासत और संस्कृति की खोज : सागर की एक दिन की यात्रा-

मध्य प्रदेश के मध्य में स्थित सागर, इतिहास और संस्कृति से भरा एक शहर है, जो खोजे जाने की प्रतीक्षा कर रहा है। हाल ही में, कक्षा **11**वीं और **12**वीं के छात्र उत्साही शिक्षकों के साथ सागर की एक आकर्षक दिन की यात्रा पर निकले। हमारी यात्रा सुबह जल्दी शुरू हुई, उन दृश्यों और अनुभवों की प्रत्याशा से भरी हुई जो हमारा इंतजार कर रहे थे |हमारा पहला पड़ाव अटल पार्क था, एक शांत सा स्थान जहाँ सुबह की कोमल धूप में हरी-भरी हरियाली ने हमारा स्वागत किया।

जब हम घुमावदार रास्तों पर टहल रहे थे, तो पार्क के शांत वातावरण ने हमारे दिन की एक आदर्श शुरुआत की।

जीवंत वनस्पतियों और करीने से सजाए गए लॉन ने एक शांतिपूर्ण राहत प्रदान की, जिससे हमें सागर की प्राकृतिक सुंदरता को आत्मसात करने का मौका मिला। हमारे यात्रा कार्यक्रम में अगला पड़ाव सागर संग्रहालय था, जो 1921 की एक ऐतिहासिक इमारत में स्थित था, जो मूल रूप से एक अस्पताल था। प्रवेश करने पर, हमारे जानकार गाइड ने हमारा गर्मजोशी से स्वागत किया, जिसने 2010 में इमारत के संग्रहालय में बदलने की कहानियों से तुरंत हमारा ध्यान आकर्षित किया।

अंदर, संग्रहालय के हॉल विभिन्न धर्मों के देवी-देवताओं को चित्रित करने वाली मूर्तियों की एक प्रभावशाली श्रृंखला से सजाए गए थे, जिन्हें बलुआ पत्थर या लाल बलुआ पत्थर से सावधानीपूर्वक तैयार किया गया था। हम चामुंडा देवी, वायु देव, ईशान, गंगा, ग्रिफिन, आदिनाथ, बुद्ध, उमा-महेश्वर जैसी मूर्तियों की जटिलता से चकित थे| प्रत्येक मूर्ति मिथक और किंवदंती की एक अनूठी कहानी कहती है। विशेष रुचिपूर्ण जनजातीय देवी-देवताओं की मूर्तियां थीं, जैसे आकर्षक दो-मुँह वाली और चार- मुँह वाली जनजातीय मूर्तियां । ये कलाकृतियाँ क्षेत्र की समृद्ध सांस्कृतिक टेपेस्ट्री की झलक प्रदान करती हैं, जो आदिवासी कलात्मकता की विविधता और गहराई को उजागर करती हैं हमारी यात्रा का मुख्य आकर्षण सागर और बुन्देलखण्ड के इतिहास पर गाइड द्वारा बताई गई एक मनोरम वीडियो प्रस्तुति थी। ज्वलंत कल्पना और व्यावहारिक वर्णन के माध्यम से, हमने क्षेत्र की विरासत और सांस्कृतिक महत्व के लिए गहरी सराहना प्राप्त की। गाइड की विशेषज्ञता स्पष्ट थी क्योंकि उन्होंने प्रत्येक मूर्तिकला के पीछे की कहानियों को साझा किया, उनके ऐतिहासिक और कलात्मक मूल्य पर जोर दिया। हमने भविष्य की पीढ़ियों के लिए इन अमूल्य कलाकृतियों को बनाए रखने के लिए अपनाई गई सावधानीपूर्वक संरक्षण तकनीकों के बारे में सीखा। सागर की हमारी एक दिन की यात्रा न केवल शैक्षिक थी, बल्कि अत्यधिक समृद्ध भी थी। हमने सदियों पुरानी कलात्मकता और शिल्प कौशल को जाना , अपने देश की अमूल्य सांस्कृतिक विरासत से परिचित हुए | हमारे गाइड के साथ संवादात्मक सत्रों ने हम छात्रों के बीच जीवंत चर्चाओं को जन्म दिया, जिससे भारतीय इतिहास और पौराणिक कथाओं के बारे में हमारी समझ गहरी हुई। जैसे ही हमने संग्रहालय और सागर को अलविदा कहा, हम अपने साथ नया ज्ञान और अपनी विरासत पर गर्व की भावना लेकर आए। वह दिन सीखने और आनंद का एक आदर्श मिश्रण था, जिसे हमारे शिक्षकों और साथी छात्रों के साथ साझा किए गए सौहार्द ने और भी खास बना दिया। सागर की हमारी यात्रा भारत के

सांस्कृतिक खजाने की समृद्धि का एक प्रमाण थी। अटल पार्क की शांत सुंदरता से लेकर सागर संग्रहालय के ज्ञानवर्धक अनुभव तक, हर पल हमारी विरासत को संरक्षित करने और संजोने के महत्त्व की याद दिलाता था । जैसे-जैसे हम वापस यात्रा कर रहे थे, हम अन्वेषण और सीखने के अवसर के लिए कृतज्ञता से भरे हुए थे| अपने जीवंत राष्ट्र के रहस्यों को उजागर करने के लिए अपने अगले साहसिक कार्य की उत्सुकता से प्रतीक्षा कर रहे थे। पीछे मुड़कर देखें तो, सागर ने हम पर एक अमिट छाप छोड़ी, इतिहास और संस्कृति के प्रति एक जुनून जगाया ,जो यात्रा की समाप्ति के बाद भी लंबे समय तक हमारे साथ रहेगा। भारत के समृद्ध अतीत के साथ गहरा संबंध चाहने वाले किसी भी व्यक्ति के लिए, सागर एक अविस्मरणीय अनुभव का वादा करता है जो समय और परंपरा से परे है।....

-वंशिका असाटी कक्षा 11ए

मेरी दो कविताएँ -(मान्या सिंह कक्षा 8 ए)

॥ राखी ॥

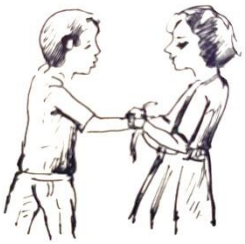

बनके रोशनी तू मेरी ज़िन्दगी में आया है
संग ना जाने कितने ख्वाब लाया है
बातें तेरी बवाल , मुस्कान लाजवाब है
न जाने तेरा होना है कैसी बाती
जो सदा मेरे चेहरे पर ख़ुशी का दीप जलाती
नादानियाँ तेरी जैसी मासूम सा फूल है
माफ़ करना करी मैंने जितनी भी भूल है
ख़ुशी के मोती पिरोकर बनाई है

एक डोर
यह डोर खींचती मुझे तेरी ओर
चल तेरे मेरे रिश्ते को एक नाम दूं
आ तेरी कलाई पर राखी की डोर बाँध दूँ|

-मान्या सिंह कक्षा 8 सी

॥ वीर शहीद ॥

मैं देश का जवान हूँ
माँ का स्वाभिमान हूँ
सीमा हो या जंग में
मैं दुश्मन से बलवान हूँ
रक्तबीज सा उबल रहा
सौ सौ पर भारी पड़ता हूँ
दुश्मन के नापाक इरादे
नेस्तनाबूत कर देता हूँ |
भारत जननी भूमि हमारी
रक्त तिलक लगाते हैं
प्राणों को न्योछावर कर
हम वीर शहीद कहते हैं |

-मान्या सिंह कक्षा 8 सी

॥ माँ ॥

नसीब का लिखा हम सबकी किस्मत होती है माँ
जिसके पैरों की रज में हो जन्नत ऐसी होती है माँ
बिन बाती जैसे दीपक सूना लगता है
वैसे ही माँ बिन जीवन अधूरा लगता है
कुछ न कहें फिर भी सब समझती है माँ
हमारे अरमानों को नई उड़ान देती है माँ
जीवन में हम कुछ बन सकें
कोशिश दिन रात करती है माँ

- **कृतिका यादव कक्षा 8 ब**

- ॥ युवा संन्यासी ॥

यह युवा संन्यासी जिसने सोच बदल दी दुनिया की
निर्धन शोषित पीड़ित के प्रति जिसके मन में करुणा थी
वह नरेंद्र से बना विवेकानंद तभी सबने जाना
उसकी प्रतिभा उसकी मेधा का लोहा सबने माना ॥
उसने ही दुनिया को बतलाया एक देश है भारत भी
भाई बहन का संबोधन जग ने पहली बार सुना
अमरीका का धर्म सभा और गूंज उठा कोना कोना
थमीं नही तालियां देर तक उसकी ऐसी धाक जमी ॥

(अजय पाण्डेय) संग्रह -ज्योदिरादित्य यादव कक्षा - 7ए

॥ जल ही जीवन है ॥

जल हमारे जीवन के लिए बहुत ही महत्वपूर्ण है। अगर पृथ्वी पर जल नही होगा तो हमारा जीना संभव नहीं। हमें हर चीज में जल की आवश्यकता पड़ती है। जीवन संरक्षण के लिए वायु के बाद जल ही सबसे महत्त्वपूर्ण तत्व है। जल एक सीमित वस्तु है जिसका समय रहते यदि उचित प्रबंधन नही किया गया तो निकट भविष्य में इसकी कमी हो जायेगी। पानी मनुष्यों और जीव जंतुओं और पेड़ पौधों सभी के लिए आवश्यक है।कृषि उद्योग के लिए भी पानी की सबसे ज्यादा जरूरत होती है। कहा भी जाता है "जल ही जीवन है। " जल नही होगा तो जीवन भी नही होगा। भारत के कई बड़े शहरों के विकास में नदियों का बहुत बड़ा सहयोग है क्योंकि नदियों के रास्ते परिवहन का कार्य बहुत ही आसानी से हो जाता है। आज के समय में हमारे वैज्ञानिक मंगल ग्रह पर जीवन की संभावना तलाशने में लगे हैं क्योंकि वहां बहुत ही अधिक पानी जमा हुआ है। वहां की वायु में नमी मिलती है। सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि हम कहीं भी जल द्वारा ही जीवन की कल्पना कर सकते हैं। जल के अभाव में जीवन की कल्पना नहीं की जा सकती ।

-पूर्वी जैन कक्षा - 7 ए

॥ राष्ट्रीय एकता ॥

राष्ट्र की संस्कृति संस्कारों स्वंत्रता और धर्म के संरक्षण के लिए राष्ट्र के लोगों में एकता का होना आवश्यक है। यही बात लौह पुरुष सरदार वल्लभ भाई पटेल भी जानते थे इसलिए उन्होंने सदैव भारत राष्ट्र के लोगों को एकता से रहने का मंत्र दिया। एकता के अभाव में समाज में असंगति और विभाजन होता है जो विकास को रोकता है और आर्थिक सामाजिक समस्याओं को बढ़ावा देता है। अपने नागरिकों में राष्ट्रीयता की भावना के विकास हेतु शिक्षा ही प्रमुख साधन है। हमारे देश का विकास इसी भावना पर निर्भर करता है। शांतिपूर्ण और पूर्ण जीवन जीने के लिए लोगों का एकजुट होकर रहना बहुत जरूरी है।

-सूर्यांश राजपूत कक्षा - 8 डी

<u>महापुरुषों के विचार</u>

देश की सेवा करने में को विश्वास है ,वह किसी और चीज में नही

-सरदार पटेल

खून का वह आखिरी कतरा ,जो वतन की हिफाजत में गिरे,दुनिया की सबसे अनमोल चीज है ।

-प्रेमचंद

खुशियां जीवन से नही बनती बल्कि खुशियों से जीवन बनता है।

-अज्ञात

महलों में रहने वाला आदमी शासन नहीं चला सकता।

-महात्मा गांधी

जो ईश्वर को अपने पास समझता है वह कभी नहीं हारता।

-महात्मा गांधी।

स्त्री का शारीरिक सामर्थ भले ही कम हो उसकी वाणी में असीम सामर्थ है

-लक्ष्मी बाई केलकर

संग्रह -बीनू ठाकुर कक्षा -8 डी

॥<u>स्वदेश का प्यार</u> ॥

यह दिन है अभिमान का
है भारतमाता के मान का
नहीं जाएगा रक्त व्यर्थ
वीरों के बलिदान का।
दिल में बसा है तिरंगा
होंगे पर यह गाना है
हम है दीवाने वतन के
तिरंगा हमारी जान है
भरा नहीं जो भावों से
बहती जिसमें रसधार नहीं
हृदय नहीं वह पत्थर है
जिसमें स्वदेश का प्यार नहीं

-प्रतिभा घोषी 5 सी (संग्रह)

अनमोल वचन

अगर हारने से डर लगता है तो जीतने की इच्छा कभी मत करना

जिंदगी में कुछ पाने के लिए तरीके बदले जाते है, इरादा नहीं।

कदम ऐसा चलो कि निशान बन जाए,
काम करो ऐसा कि पहचान बन जाए
यहां जिंदगी तो सभी जी लेते है
मगर जिंदगी जिओ तो ऐसी कि मिशाल बन जाए।

दूसरों को सुनाने के लिए अपनी आवाज ऊंची मत करो बल्कि अपना व्यक्तित्व इतना बनाओ कि आपको सुनने के लिए लोग इंतजार करे ।

संग्रह -सार्थक चौबे 5 सी

शिक्षक कोना

स्वतंत्रता संग्राम मे स्थानीय नायिका का योगदान : श्रीमती सहोद्राबाई राय

स्वतंत्रता संग्राम सेनानी श्रीमती सहोद्राबाई राय का जन्म मध्य प्रदेश के दमोह जिले की पथरिया तहसील के बोथरई में हुआ था।

उन्होंने 1942 में 23 वर्ष की आयु में महात्मा गांधी के असहयोग आंदोलन में भाग लिया और गिरफ्तार हुईं, उन्होंने 1945 में नौखाली में हिंदू-मुस्लिम एकता के लिए भी काम किया।

1955 में गोवा मुक्ति आंदोलन के दौरान गोवा में राष्ट्रीय ध्वज फहराते समय पुर्तगाली सैनिकों ने उन पर गोलियां चलाईं और उन्हें तीन गोलियां लगीं, लेकिन सहोद्रा राय ने अभूतपूर्व साहस दिखाते हुए अपनी जान की परवाह किए बिना राष्ट्रीय ध्वज को जमीन पर नहीं गिरने दिया।

1979 में उन्होंने श्रीमती इंदिरा गांधी की गिरफ्तारी के विरोध में सत्याग्रह में भाग लिया और जेल गईं। वे दूसरी, तीसरी और पांचवीं लोकसभा की सदस्य रहीं। वे सागर जिले की पहली महिला सांसद थीं।

उन्होंने देश के विभाजन के बाद सिंधियों के पुनर्वास में भी मदद की और हरिजन कल्याण, वयस्क शिक्षा, खादी विकास, महिला संगठन और गरीबों की सहायता जैसे कई सामाजिक कार्य किए।

सागर जिले के कर्रापुर गांव में अस्पताल बनाने के लिए उन्होंने अपनी जमीन दान कर दी, जिस पर आज भी उनके नाम से प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र संचालित है।

बीड़ी की छाल ढोने से लेकर संसद तक का उनका सफर संघर्ष से भरा रहा, इसके बावजूद उन्होंने स्वतंत्रता संग्राम में छाप छोड़ी और अनुकरणीय योगदान दिया।

161986 में स्थापित शासकीय महिला पॉलिटेक्निक कॉलेज ,सागर की स्थापना पराक्रम और शौर्य की प्रतीक वीरांगना सहोदरा राय के नाम पर की गई, जिस पर हम सागरवासियों को गर्व है।

आलेख - श्री रूपेश मिश्रा
(समन्वयक)

॥ जय कन्हैया लाल की ॥

गोकुल में तो जन्म लियो
नंद आँगन बजे बधाई।
कारागार में रोये देवकी
यशोदा को देवें बधाई।

हे ऊपर वाले तूने भी
क्या रचना रची कमाल की
जय कन्हैया लाल की

असुरों का संहार करने को
कृष्ण यहां पर जन्म लिए
दूध पिलाने आई पूतना
उसको भी वो खत्म किए।

नन्हे पैरों की रुनझुन सुनकर
माता हुई निहाल थी
जय कन्हैया लाल की

घर घर वंदन वार सजे हैं
नंद यशोदा वहां झूम रहे।
गोदी में लेकर कान्हा को
प्यार सभी है देखो कर रहे।

ग्वाल बाल संग दिन भर खेलें,
गायों संग वो बन बन डोलें।
दधी माखन मुंह पर लपटाए
गोपियों की वो मटकी फोड़े।

यहां बिना सींग के असुर खड़े हैं,
यहां घर बाहर चौराहों में
अब द्रौपदी की लाज बचालो,
अगल बगल गलियारों में

ढोल मजीरे उदास पड़े हैं
है कहानी हर साल की
जय कन्हैया लाल की

- **डॉ संजय तिवारी**

॥ मैं पूछता हूं ॥

मैं पूछता हूं! आवाम से
राजनीतिज्ञ अय्यारों से
क्या सीने में आग नहीं , उठता है तूफ़ान नहीं
आंखों में अंगार नहीं, प्रतिशोध की ज्वाल नहीं
कहाँ सो गया वह पौरुष, जो भारत को माता कहता था
इसकी रक्षा की खातिर, प्राण न्योछावर करता था
चाहे वह तुर्क मुहम्मद हो या ब्रिटिश हुकूमत हो
लोहे के चने चबवाता था रण विजय कर जाता था ॥
मैं पूछता हूं! आवाम से
राजनीतिज्ञ अय्यारों से
क्यों हमारी वीरता अब ख़ाक हो चुकी है
कायरता छिपाने को उदार हो चुकी है
क्यों आतंकी विस्फोट यहां कत्लेआम हो रहे हैं
नापाक पाक इरादों से आतंक मचा रहे हैं
अंगारों से घिरी मानवता गुहार कर रही है
त्राहि त्राहि पुकारती चीत्कार कर रही है ॥
कहता है 'आलोक' आवाम से
राजनीतिज्ञ अय्यारों से
उठो धरा के अमर सपूतों भर लो ऊर्जा सीने में
आज समय फिर आया है दुश्मन से टकराने को
उदारता का फेंको चोला कूद पड़ो रणांगण में
जवाबे ईंट पत्थर से होगा उसको ये समझाने को ॥
जवाबे ईंट पत्थर से होगा उसको ये समझाने को ॥

-श्री नीरज श्रीवास्तव 'आलोक'

झाँसी की रानी

स्वतंत्रता की बलिवेदी पर, लिख दी अमर कहानी |
ऐसी वह भारत की बेटी, झाँसी वाली रानी |
वीर भूमि पर जब गोरों ने, अपना कदम बढाया |
देश की उर्वर माटी ने, अपना कर्तव्य निभाया |
आज नहीं हैं साथ मगर, है उनकी अमिट निशानी |
ऐसी वह भारत की बेटी, झाँसी वाली रानी
अपनी माँ की लाज बचाने, उतर पड़ी वह बाला थी |
भीषण रण संघर्ष, धधकती ज्वाला सी |
होंगे वो कोई और, झुक गया जिनका मस्तक |
दुर्गा काली समर भूमि में, दे दी दस्तक |
झाँसी की तिल भूमि न दूँगी ,देखूँ कितना है पानी |
ऐसी वह भारत की बेटी, झाँसी वाली रानी|
लाड़ प्यार से पली बढ़ी, माँ की ममता भी थी रग में |
कमज़ोर समझ बढ़ आया तो ,काटूँगी दम्भी वह पग मैं|
अबला नहीं समझना ,मैं हूँ झाँसी की मर्दानी|
ऐसी वह भारत की बेटी ,झाँसी वाली रानी|
झाँसी गद्दार नहीं होगी ,सबको समझ लिया ऐसे |
राष्ट्रप्रेम की धरती को, बंजर मान लिया कैसे ?
किसमे इतनी हिम्मत है, जो रोके गति तूफ़ानी|
ऐसी वह भारत की बेटी ,झाँसी वाली रानी|
रहे अमर वह वीर भारती, नमन करें क्षत्राणी को |
याद करें वह शौर्य दिवस, हम याद करें बलिदानी को |
मातृभूमि करने स्वतंत्र, जिसने दे दी कुर्बानी |
ऐसी वह भारत की बेटी, झाँसी वाली रानी |

-डॉ कीर्तिवर्धन श्रीवास्तव 'हमराही'

व्यक्ति विशेष - महात्मा गाँधी

मोहनदास करमचंद गाँधी का जन्म 2 अक्टूबर 1869 को वर्तमान गुजरात राज्य के पोरबंदर जिले के मध्यमवर्गीय परिवार में हुआ था। उनके पिता का नाम करमचंद गाँधी एवं उनकी माता का नाम पुतलीबाई था। वे अपने तीन भाईयों में सबसे छोटे थे। उनकी माँ पुतलीबाई बहुत सज्जन एवं धार्मिक स्वभाव की थीं जिसने गांधीजी के व्यक्तित्व पर बहुत गहरा प्रभाव डाला।

गाँधीजी जब सात वर्ष के थे, उनका परिवार काठियावाड़ राज्य के राजकोट जिले में जाकर बस गया जहाँ उनके पिता करमचंद गाँधी दीवान के पद पर नियुक्त थे। गाँधीजी ने राजकोट में प्राथमिक और उच्च शिक्षा प्राप्त की। वे एक साधारण छात्र थे और स्वभाव से अत्यधिक शर्मीले एवं संकोची थे।

बापू बहुत ही सीधे एवं ईमानदार व्यक्ति थे। वे अपनी दृढ़ता एवं निष्ठा के लिए जाने जाते थे। जिस छोटे से घर में गाँधीजी का जन्म हुआ था, वे घर आज "कीर्ति मंदिर" के नाम से विख्यात है। उनकी माँ पुतलीबाई एक पारंपरिक हिन्दू महिला थीं जो धार्मिक प्रवृत्ति वाली एवं संयमी थी। उन्होंने अपना पूरा जीवन अपने घर एवं परिवार के लिए समर्पित कर दिया था। गाँधीजी की माँ के व्यक्तित्व ने उनके व्यक्तित्व को बहुत प्रभावित किया।

गाँधीजी अपने शुरूआती जीवन में राजा हरिश्चन्द्र नाटक से भी बहुत प्रभावित हुए। राजा हरिश्चन्द्र की सच्चाई एवं कष्टकर जिंदगी से सफलतापूर्वक निकलने की अद्भुत क्षमता ने गाँधीजी को अत्यंत प्रभावित किया। उन्होंने भी राजा हरिश्चन्द्र के दिखाये मार्ग पर चलने का मन बना लिया।
गाँधीजी में कोई विशेष प्रतिभा नहीं थी न ही उन्हें खेलों में रुचि थी। वे हमेशा अकेला रहना पसंद करते थे। उन्होंने अपने पाठ्यक्रम के अतिरिक्त कभी कोई पुस्तक नहीं पढ़ीं, लेकिन उन्होंने हमेशा अपने शिक्षकों का सम्मान किया और किसी भी परीक्षा में कभी भी नक़ल नहीं की।
गाँधीजी अपने बड़े भाई लक्ष्मीदास के बहुत करीब थे। पिताजी की मृत्यु के बाद उनके बड़े भाई ने ही उनकी पढ़ाई में मदद की एवं उन्हें क़ानूनी पढ़ाई के लिए इंग्लैंड भेजा।

दक्षिण अफ्रीका गाँधीजी के जीवन का एक महत्वपूर्ण पड़ाव साबित हुआ। यहाँ उन्हें अलग-अलग तरह की कठिनाईयों का सामना करना पड़ा। परिणामतः इन अनुभवों ने उनके जीवन को पूरी तरह बदल दिया।

सन् 1893 ई० में गाँधीजी दादा अब्दुल्ला नामक व्यापारी के विधि सलाहकार के रूप में काम करने डरबन गए। दक्षिण अफ्रीका में काले भारतीयों एवं अफ्रीकियों के साथ जातीय भेदभाव किया जाता था। इस जातीय भेदभाव का सामना गाँधीजी को भी करना पड़ा। अफ्रीका में गाँधीजी के कार्यों ने उन्हें पूरी तरह से बदल दिया।। एक दिन डरबन के एक न्यायालय में वहां के दंडाधिकारी ने उन्हें अपनी पगड़ी उतारने को कहा। गाँधीजी ने ऐसा करने से बिल्कुल मना कर दिया एवं न्यायालय से बाहर निकल गये।
31 मई 1893 को प्रिटोरिया जाने के दौरान एक श्वेत व्यक्ति ने गाँधीजी के प्रथम श्रेणी में यात्रा करने को लेकर अपनी नाराजगी जताई एवं उन्हें गाड़ी के अंतिम माल डिब्बे में जाने को कहा। गाँधीजी ने अपने पास प्रथम श्रेणी की टिकट होने की बात कहकर जाने से मना कर दिया, जिसके बाद पीटमेरित्जबर्ग में उन्हें ट्रेन से उतार दिया गया।
सर्दी का समय था। स्टेशन के प्रतीक्षालय में गाँधीजी ठंड से ठिठुरते रहे, उसी समय गाँधीजी ने यह फ़ैसला किया कि वे अफ्रीका में रहकर भारतीयों के साथ हो रहे जातीय भेदभाव के विरुद्ध संघर्ष करेंगें। इसी संघर्ष के दौरान उन्होंने अहिंसात्मक रूप से अपना विरोध जताया, जो बाद में "सत्याग्रह" के नाम से जाना गया।
आज भी वहाँ शहर के मध्य, चर्च स्ट्रीट में गाँधीजी की कांस्य मूर्ति स्थापित है।

भारतीय राहत अधिनियम के पारित होने के पश्चात गाँधीजी अफ्रीका में जारी विरोध को छोड़ जनवरी 1915 में भारत लौट आये। भारत लौटने पर सबने उनका गर्मजोशी से स्वागत किया।

भारत लौटने के बाद गाँधीजी ने यह निर्णय किया कि पहले एक वर्ष तक वे देश के विभिन्न क्षेत्रों का भ्रमण कर लोगों की बात सुनेंगें जबकि वह खुद कुछ नहीं बोलेंगें। पूरे एक वर्ष तक देश भर में घूमने के बाद मई 1915 को गाँधीजी ने अहमदाबाद से सटे साबरमती नदी के तट पर अपना एक आश्रम बनाया,

जिसका नाम उन्होंने सत्याग्रह आश्रम रखा। यह गाँधीजी के विभिन्न आश्रमों में से एक था। गाँधीजी ने सन् 1930 ई० में साबरमती आश्रम से दांडी यात्रा निकाली थी जिसने भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इस आश्रम के महत्व को देखते हुए भारत सरकार ने इसे राष्ट्रीय स्मारक की मान्यता दी।

गाँधीजी ने अपना पहला सत्याग्रह सन् 1917 ई० में बिहार के चंपारण जिले से शुरू किया। अंग्रेज़ यहाँ के नील बगान के मालिकों का शोषण किया करते थे।

गाँधीजी ने इनके साथ हो रहे अत्याचार का विरोध किया। फलस्वरूप गाँधीजी को जिला प्रशासन के द्वारा जिला छोड़ने का आदेश दिया गया। गाँधीजी के इस आदेश को मानने से इंकार करने के बाद दंडाधिकारी ने उनके खिलाफ़ मुकदमा स्थगित कर दिया एवं उन्हें जमानत के बिना रिहा कर दिया। भारत में सत्याग्रह के रूप में अपने पहले प्रयोग की सफलता ने देश में गाँधीजी की प्रतिष्ठा बढ़ा दी।

भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में गाँधी युग की शुरुआत सन् 1920 ई० के असहयोग आंदोलन से हुई। भारत में असहयोग आंदोलन का मुख्य लक्ष्य ब्रिटिश सरकार के खिलाफ़ अहिंसक विरोध जताना एवं सविनय अवज्ञा आंदोलन की शुरुआत करना था।

इस आंदोलन का नेतृत्व गाँधीजी एवं भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस दल ने किया था। कई भारतीयों ने अपनी उपाधियाँ लौटा दीं एवं अपने सम्मान का परित्याग कर दिया, वकीलों ने वकालत छोड़ दी, छात्रों ने कॉलेज एवं स्कूल जाना बंद कर दिया एवं शहरों में कार्यरत हजारों लोग अपनी नौकरी छोड़ गांवों में अहिंसा एवं असहयोग का संदेश प्रसारित करने गये एवं लोगों को कानून की अवहेलना करने के लिए तैयार करने लगे। गाँधीजी ने भी 'यंग इंडिया' एवं 'नवजीवन' नामक अपने दो साप्ताहिक समाचार-पत्रों के माध्यम से लोगों तक अपनी बात पहुँचाई। सर्वत्र विदेशी कपड़ों को जला दिया गया एवं सबने अपने घरों में चरखों पर कपड़े बुनने शुरू कर दिये। सदियों से जिन महिलाओं को घर से बाहर नहीं निकलने दिया जाता था, उन्होंने भी दांडी यात्रा में भाग लिया। हालाँकि चौरी-चौरा की घटना के बाद गाँधीजी को यह आंदोलन वापस लेना पड़ा। नमक सत्याग्रह एक ऐसा अभियान था जिसका उद्देश्य औपनिवेशिक भारत में ब्रिटिश नमक कर के खिलाफ अहिंसक विरोध प्रदर्शन करना था। इस अभियान की शुरुआत 12 मार्च 1930 को दांडी यात्रा के रूप में हुई।

5 मई 1930 को गाँधीजी को गिरफ्तार कर लिया गया एवं सरकार ने इस आंदोलन को दबाने की भरपूर कोशिश की, लेकिन सरकार को इसमें सफलता नहीं मिल पाई। अतः गाँधीजी को 26 जनवरी 1931 को मुक्त कर दिया गया। इसके बाद 5 मार्च 1931 को बापू एवं ब्रिटिश वायसराय लॉर्ड इरविन के बीच एक समझौते हुआ जिसके बाद उन्हें लंदन के दूसरे गोलमेज सम्मेलन में कांग्रेस के प्रतिनिधि के रूप में आने को कहा गया। अंग्रेजों ने क्रूर दमन की अपनी नीति नए सिरे से निर्धारित की थी। ब्रिटिश सरकार के इस रवैये से बेहद निराश होकर गाँधीजी ने जनवरी 1932 को फिर से सविनय अवज्ञा आंदोलन की शुरुआत की।

सन 1942 में गाँधीजी ने 'भारत छोड़ो' का नारा दिया जो भारत में ब्रिटिश शासन के अंत का संकेत था। भारत एवं पाकिस्तान के विभाजन ने गाँधीजी को झकझोर कर रख दिया।

जब पूरा देश आज़ादी का जश्न मनाने में व्यस्त था, गाँधीजी नओखली में सांप्रदायिक दंगा पीड़ितों की स्थिति सुधारने की कोशिशों में लगे हुए थे। गाँधीजी अत्यंत साहसी एवं निर्भीक स्वभाव के थे। उनका जीवन और उनके द्वारा दी गयी शिक्षा इस देश के मूल्यों के साथ-साथ मानवता के मूल्यों को भी प्रदर्शित करता है। वे स्वतंत्रता-सेनानियों के लिए एक प्रकाश-स्तम्भ की तरह रहे। उन्होंने स्वंय अहिंसा के मार्ग पर चलकर दुनिया को अहिंसा का पाठ पढ़ाया।

गाँधीजी के जन्म दिवस को प्रत्येक वर्ष 'गाँधी जयंती' के रूप में मनाया जाता है। भारत के लोग उन्हें प्यार से 'बापू' एवं 'राष्ट्र पिता' के नाम से पुकारते हैं। वे मानवता एवं शांति के प्रतीक हैं।

संयुक्त राष्ट्र ने भी 2 अक्टूबर को अंतर्राष्ट्रीय अहिंसा दिवस के रूप में मनाने की घोषणा की है। 15 जून 2007 के संयुक्त राष्ट्र महासभा के प्रस्ताव के अनुसार, अंतर्राष्ट्रीय अहिंसा दिवस "शिक्षा एवं जन जागरूकता के माध्यम से अहिंसा के संदेश को प्रसारित करने" का अवसर है। इसी प्रस्ताव के अंतर्गत

स्मरणोत्सव का आयोजन भी किया जाता है। यह प्रस्ताव "अहिंसा के सिद्धांत की सार्वभौमिक प्रासंगिकता" को सुरक्षित रखने एवं "शांति, सहिष्णुता, ज्ञान एवं अहिंसा पर आधारित संस्कृति" के निर्माण में अपना योगदान देता है।

गांधी जी द्वारा बताई गई कुछ प्रसिद्ध सूक्तियां इस प्रकार हैं -

"अहिंसा सबसे बड़ा कर्तव्य है। यदि हम इसका पूरा पालन नहीं कर सकते हैं तो हमें इसकी भावना को अवश्य समझना चाहिए और जहां तक संभव हो हिंसा से दूर रहकर मानवता का पालन करना चाहिए।"

"उस प्रकार जिएं कि आपको कल मर जाना है। सीखें उस प्रकार जैसे आपको सदा जीवित रहना हैं।"

"आजादी का कोई अर्थ नहीं है यदि इसमें गलतियां करने की आजादी शामिल न हों।"

"बेहतर है कि हिंसा की जाए, यदि यह हिंसा हमारे दिल में हैं, बजाए इसके कि नपुंसकता को ढकने के लिए अहिंसा का शोर मचाया जाए।"

"व्यक्ति को अपनी बुद्धिमानी के बारे में पूरा भरोसा रखना बुद्धिमानी नहीं है। यह अच्छी बात है कि याद रखा जाए कि सबसे मजबूत भी कमजोर हो सकता है और बुद्धिमान भी गलती कर सकता है।"

"आपको मानवता में विश्वास नहीं खोना चाहिए। मानवता एक समुद्र है, यदि समुद्र की कुछ बूंदें सूख जाती है तो समुद्र मैला नहीं होता।"

"ईमानदार मतभेद आम तौर पर प्रगति के स्वस्थ संकेत हैं।"

(महात्मा गाँधी शांति के दूत - भारत का राष्ट्रीय पोर्टल से साभार)

<u>विनम्र निवेदन</u>

यद्यपि पत्रिका प्रकाशित करते समय इस बात का पूर्ण ध्यान रखा गया है कि कोई ग़लती न हो तथापि कोई त्रुटि रह गई हो तो संपादक क्षमा प्रार्थी है | विद्वत जनों के अपने अमूल्य सुझाव सादर आमंत्रित हैं |

ज्ञानेन पुंसां सकलार्थ सिद्धि :

संपादक संरक्षक:-प्राचार्य ज्ञानोदय एस.एम्.व्ही.एम. हायर सेकंडरी स्कूल, खुरई

मुख्य संपादक:- डॉ. कीर्तिवर्धन श्रीवास्तव

टंकण सहयोग:- श्री नीरज श्रीवास्तव

छायांकन:- श्री प्रशांत सील

सहयोग:- हिंदी विभाग

तकनीकी सहायता:- अविनाश सविता

www.facebook.com/gyanodayakhurai
gyanodayaprincipal@gmail.com
www.gyanodayakhurai.org
youtube.com/UC_7RhrC1nipjZTanSKoEVEA
gyanodayakhurai/9826829441
gyanodayacampuscare.in
Gyanodaya khurai
9826829441, 07581-292149,292154

अधिक जानकारी प्राप्त करने हेतु क्यूआर स्कैन करे

ज्ञानोदय एस.एम्.व्ही.एम. हायर सेकंडरी स्कूल, खुरई